सनातन ज्ञान | वैदिक गीता ज्ञान | Sanatan Gita Gyaan | Vedic Gita Wisdom Astrology - Palmistry

Sanatan Gyaan Vedic Hub पर श्रीमद्भगवद्गीता, रामायण, वैदिक ज्योतिष, हस्तरेखा शास्त्र, वास्तु,अंकशास्त्र का प्रामाणिक एवं सरल ज्ञान प्राप्त करें। ब्लॉग प्राचीन भारतीय ग्रंथों पर आधारित आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करता है। आध्यात्मिक, वैदिक ज्ञानमंच जहाँ भारतीय प्राचीनग्रंथों— श्रीमद्भगवद्गीता, रामायण, हस्तरेखा शास्त्र Professor Krishna Bir Singh, a renowned scholar of Hindi literature Sanatan Gyaan, Vedic Hub, Bhagavad Gita, Vedic Astrology, Palmistry, Vastu Shastra, Numerology, Sanatan Dharma

Subscribe, Follow this Blog

Followers (21)

Follow

श्रीमद्भगवद गीता: अध्याय 1, श्लोक 45- महापाप के बोध से मानवीय संवेदना का उदय, समकालीन गीता: एक आधुनिक और

प्रामाणिक टीका, © प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान, खेड़ी (काँटी) #Srimad Bhagavad Gita: Chapter 1, Verse 45 - The emergence of human compassion from the realization of great sin, Contemporary Gita: A Modern and Authentic Commentary © Professor (Dr.) Krishan Bir Singh Chauhan, Kheri (Kanti)

- January 25, 2026

श्रीमद्भगवद गीता: अध्याय 1, श्लोक 45-

महापाप के बोध से मानवीय संवेदना का उदय, समकालीन गीता: एक आधुनिक और प्रामाणिक टीका

© प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान, खेड़ी (काँटी)

भूमिका

श्रीमद्भगवद गीता के प्रथम अध्याय 'अर्जुनविषादयोग' का 45वां श्लोक भारतीय मनोविज्ञान और नैतिक द्वंद्व का एक ऐतिहासिक मोड़ है। प्रोफेसर कृष्ण बीर सिंह चौहान अपनी टीका 'समकालीन गीता' में स्पष्ट करते हैं कि यह श्लोक केवल अर्जुन का विलाप नहीं है, बल्कि यह एक 'जागृत अंतरात्मा' (Awakened Conscience) की पहली पुकार है। जब मनुष्य महत्वाकांक्षा (Ambition) की अंधी दौड़ में अपनों का ही विनाश करने को तैयार हो जाता है, तब 'विवेक' का जो अंकुश लगता है, वही इस श्लोक का मूल है।

यहाँ अर्जुन एक योद्धा से ऊपर उठकर एक 'विचारशील मानव' के रूप में स्थापित होते हैं। वे राज्य-सुख के लोभ और स्वजनों की हत्या के महापाप के बीच के समीकरण को हल करने का प्रयास कर रहे हैं। यह श्लोक आधुनिक समाज के

लिए एक चेतावनी है जो भौतिक सुखों के लिए नैतिक मूल्यों की बलि दे रहा है।

मूल श्लोक

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ।

यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥ 45 ॥

शब्द-विभाजन और उच्चारण

संस्कृत का अल्प ज्ञान रखने वाले पाठकों के लिए इस श्लोक का सरल पदच्छेद निम्न प्रकार है:

अहो । बत । महत् । पापम् । कर्तुम् । व्यवसिताः । वयम् ।

यत् । राज्य-सुख-लोभेन । हन्तुम् । स्व-जनम् । उद्यताः ॥

व्याकरणिक और शाब्दिक विश्लेषण

प्रोफेसर कृष्ण बीर सिंह चौहान कृत 'समकालीन गीता' के अनुसार एक-एक शब्द

का गहन विश्लेषण:

शब्द (Word)	व्याकरण (Grammar)	हिंदी अर्थ (Meaning)	भावार्थ (Contextual Meaning)
अहो (Aho)	अव्यय (Interjection)	हाय! / आश्चर्य	गहरे खेद और आश्चर्य की अभिव्यक्ति।
बत (Bata)	अव्यय (Interjection)	खेद है / धिक्कार	आत्म-ग्लानि और दुख का सूचक।
महत् (Mahat)	विशेषण (Adjective)	महान / बहुत भारी	पाप की गंभीरता और विशालता।
पापम् (Pāpam)	संज्ञा (Noun, 2/1)	पाप / अधर्म	नैतिक पतन का कार्य।
कर्तुम् (Kartum)	तुमुन् प्रत्यय (Infinitive)	करने के लिए	क्रियान्वित करने हेतु।
व्यवसिताः (Vyavasitāḥ)	कृदंत (Past Participle)	निश्चय कर चुके / तैयार	मानसिक रूप से दृढ़ संकल्पित होना।
वयम् (Vayam)	सर्वनाम (अस्मद्, 1/3)	हम (सब)	अर्जुन और उनके पक्ष के लोग (पांडव)।
यत् (Yat)	अव्यय	जो / कि	कारण बताने हेतु।
राज्यसुखलोभेन	सामासिक पद (Compound)	राज्य और सुख के लोभ से	सत्ता और भोग की लालसा के कारण।
हन्तुम् (Hantum)	तुमुन् प्रत्यय	मारने के लिए	हत्या करने हेतु।
स्वजनम् (Sva-janam)	संज्ञा (2/1)	अपने लोगों को / स्वजनों को	अपने परिवार, गुरु और बंधुओं को।
उद्यताः (Udyatāḥ)	विशेषण	तैयार हुए / तत्पर	हिंसक कार्य के लिए उद्यत।

सामान्य हिंदी अर्थ

"हाय! बड़े शोक (खेद) की बात है कि हम लोग महान पाप करने का निश्चय कर बैठे हैं; जो कि राज्य और सुख के लोभ से अपने स्वजनों (कुल, गुरुजनों और भाइयों) को मारने के लिए तैयार हो गए हैं।"

प्रसंग

महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र में होने जा रहा है। दोनों सेनाएं आमने-सामने खड़ी हैं। अर्जुन ने भगवान कृष्ण से अपना रथ दोनों सेनाओं के बीच ले जाने को कहा। वहाँ अपने पितामह भीष्म, गुरु द्रोण और अन्य सगे-संबंधियों को देखकर अर्जुन का शरीर कांपने लगा, गांडीव हाथ से छूटने लगा।

'समकालीन गीता' के अनुसार, यह क्षण अर्जुन के मनोवैज्ञानिक रूपांतरण का क्षण है। यह श्लोक अर्जुन की उस मनःस्थिति का वर्णन करता है जहाँ उसे अचानक यह एहसास होता है कि वह जिस "विजय" को धर्म समझ रहा था, वह वास्तव में "लोभ" से प्रेरित एक "महापाप" है। यह अंतर्दृष्टि (Insight) ही श्लोक 45 की पृष्ठभूमि है।

विस्तृत व्याख्या

(प्रोफेसर कृष्ण बीर सिंह चौहान की 'समकालीन गीता' के अनुसार)

इस श्लोक की व्याख्या करते हुए प्रोफेसर चौहान लिखते हैं कि यहाँ अर्जुन दो शब्दों का प्रयोग बहुत सोच-समझकर करते हैं: 'महत्पापं' (महान पाप) और 'राज्यसुखलोभेन' (राज्य सुख का लोभ)।

1. अहो बत (आत्म-धिक्कार): अर्जुन दूसरों को दोष नहीं दे रहे। वे दुर्योधन की दुष्टता की बात नहीं कर रहे, बल्कि स्वयं अपनी (वयम्) बुद्धि पर आश्चर्य कर रहे हैं। 'समकालीन गीता' में प्रो. चौहान कहते हैं, *"सच्चा पश्चाताप वही है जो दूसरे के अपराध को देखने से पहले स्वयं की नीयत का विश्लेषण करे।"* अर्जुन को ग्लानि है कि वह एक बुद्धिमान और धर्मज्ञ होते हुए भी लोभ के वश में कैसे आ गए।

2. बुद्धि का भ्रष्ट होना: अर्जुन कहते हैं कि हम *व्यवसिताः* (निश्चय कर चुके हैं)। यानी, हमने पूरी योजना बना ली, हथियार उठा लिए, और अब मारने को तैयार हैं। यह दर्शाता है कि लोभ मनुष्य की बुद्धि को कैसे सम्मोहित कर लेता है कि उसे 'अपनों की हत्या' भी 'युद्ध नीति' लगने लगती है।

3. लोभ का मनोविज्ञान: अर्जुन ने समस्या की जड़ पकड़ ली है—'लोभ'। यह

युद्ध न्याय के लिए कम और राज्य-सुख के लिए अधिक लग रहा है। प्रो. चौहान व्याख्या करते हैं कि *"जब लक्ष्य केवल 'भोग' (सुख) बन जाता है, तो साधन 'हिंसा' बन ही जाते हैं।"*

प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान की व्याख्या की विशिष्टता

(अन्य टीकाओं से भिन्नता और श्रेष्ठता)

जहाँ अन्य टीकाकार इस श्लोक को अर्जुन के "मोह" या "कायरता" के रूप में देखते हैं, वहीं प्रोफेसर कृष्ण बीर सिंह चौहान अपनी 'समकालीन गीता' में इसे 'नैतिक चेतना का विस्फोट' (Explosion of Ethical Consciousness) मानते हैं।

- विशिष्ट दृष्टिकोण: प्रो. चौहान का तर्क है कि एक कायर युद्ध से भागता है क्योंकि उसे मृत्यु का भय होता है। लेकिन यहाँ अर्जुन को अपनी मृत्यु का भय नहीं है, उसे 'पाप' का भय है। यह कायरता नहीं, यह 'सात्विक पीड़ा' है।
- प्रमाण: अर्जुन कह रहे हैं "हम पाप करने जा रहे हैं।" एक अपराधी कभी पाप स्वीकार नहीं करता। अर्जुन का यह स्वीकारोक्ति ही उन्हें 'शिष्य' बनने की पात्रता प्रदान करती है। प्रो. चौहान लिखते हैं, *"अपनी गलती को स्वीकार करने का साहस ही गीता के ज्ञान का प्रवेश द्वार है।"*

प्राचीन वेदांत आचार्यों का दृष्टिकोण

इस श्रेणी में आदि शंकराचार्य, रामानुजाचार्य और मध्वाचार्य जैसे प्राचीन ऋषि आते हैं। इनका मुख्य जोर 'मोक्ष' और 'धर्म' पर है।

- गीता भाष्य (आदि शंकराचार्य) आनंदगिरि टीका:
  - मत: शंकराचार्य जी श्लोक 45 को अर्जुन के 'अविवेक' (Ignorance) और 'मोह' (Delusion) का परिणाम मानते हैं। उनके अनुसार, अर्जुन "अहंकार" और "ममता" (यह मेरे हैं, मैं इनका हूँ) के कारण पाप-पुण्य के भ्रम में पड़ गए हैं। वे इसे 'कायरता' नहीं, बल्कि 'आत्म-ज्ञान के अभाव' के रूप में देखते हैं।
- श्रीभाष्य (रामानुजाचार्य) . तमिल भाष्य:

- मत: रामानुजाचार्य जी इसे अर्जुन की 'अस्थान-स्नेह' (Misplaced Compassion) कहते हैं। वे कहते हैं कि अर्जुन का हृदय कोमल है, लेकिन युद्ध के समय दया दिखाना धर्म के विरुद्ध है। वे इसे अर्जुन की "सात्विक दुर्बलता" मानते हैं।

- गीता तात्पर्य निर्णय (मध्वाचार्य) , जयतीर्थ:
  - मत: द्वैत मत के अनुसार, अर्जुन वास्तव में मोह में नहीं हैं, बल्कि भगवान की लीला के लिए मोह का 'अभिनय' कर रहे हैं ताकि गीता का ज्ञान प्रकट हो सके। वे श्लोक 45 को एक "लीला-संवाद" मानते हैं।

- गीता विवेक (मधुसूदन सरस्वती):
  - मत: वे कहते हैं कि अर्जुन का यह विषाद (शोक) वैराग्य की पहली सीढ़ी है। जब तक व्यक्ति संसार (राज्य-सुख) से विरक्त नहीं होता, ज्ञान नहीं मिलता।

भक्ति मार्गीय आचार्यों और संतों का दृष्टिकोण

इस श्रेणी में वे टीकाकार हैं जो अर्जुन को भगवान का परम भक्त मानते हैं।

- ज्ञानेश्वरी (संत ज्ञानेश्वर):
  - मत: संत ज्ञानेश्वर श्लोक 45 की व्याख्या बहुत ही भावुकता से करते हैं। वे लिखते हैं कि अर्जुन का मन "मक्खन की तरह पिघल गया है।" वे इसे पाप का डर नहीं, बल्कि "प्रेम की अधिकता" मानते हैं जहाँ भक्त किसी को चोट पहुँचाना नहीं चाहता।

- भगवद गीता यथार्थ रूप (स्वामी प्रभुपाद - ISKCON):
  - मत: स्वामी प्रभुपाद अर्जुन का पुरजोर समर्थन करते हैं। वे लिखते हैं, *"एक वैष्णव (भक्त) स्वभाव से ही अहिंसक होता है।"* अर्जुन का राज्य-सुख को ठुकराना यह सिद्ध करता है कि वे भोगी नहीं, बल्कि त्यागी हैं। प्रभुपाद जी के अनुसार, यह श्लोक अर्जुन की 'साधुता' (Saintliness) का प्रमाण है।

- यथार्थ गीता (स्वामी अड़गड़ानंद जी):
    - मत: वे इसे आंतरिक युद्ध से जोड़ते हैं। स्वजन का अर्थ है—मन के विकार (काम, क्रोध)। साधक (अर्जुन) शुरुआत में इन विकारों को अपना मानकर छोड़ने से डरता है।

आधुनिक समाज सुधारकों और विचारकों का दृष्टिकोण (Modern Reformers)

स्वतंत्रता संग्राम और आधुनिक भारत के निर्माण के समय लिखी गई टीकाएं।

- गीता रहस्य (बाल गंगाधर तिलक):
    - मत: तिलक जी इसे 'कर्तव्य-विमूढ़ता' (Confusion of Duty) कहते हैं। वे कहते हैं कि अर्जुन संन्यासी की तरह बात कर रहे हैं जबकि वे गृहस्थ और क्षत्रिय हैं। तिलक जी के अनुसार, श्लोक 45 "कर्म से भागने" की प्रवृत्ति है।
- गीता प्रवचन (विनोबा भावे) & गीता माता (महात्मा गांधी):
    - मत: गांधी जी और विनोबा जी के लिए यह श्लोक 'अहिंसा' की पुकार है। गांधी जी के अनुसार, अर्जुन की आत्मा हिंसा के विरुद्ध विद्रोह कर रही है। यह श्लोक सिद्ध करता है कि युद्ध कभी भी समस्या का हल नहीं हो सकता।
- श्री अरविंद (Sri Aurobindo):
    - मत: अरविंद इसे 'प्राकृत मानव का संकट' कहते हैं। अर्जुन अभी सामान्य मानवीय धरातल पर है, जहाँ पाप और पुण्य के सामाजिक नियम लागू होते हैं। उसे इससे ऊपर उठकर 'दिव्य कर्म' करना है।

दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण (Philosophical & Psychological)

- गीता दर्शन (ओशो):

- मत: ओशो की व्याख्या सबसे अलग और तीखी है। वे श्लोक 45 को अर्जुन की 'नपुंसकता का तर्क' (Rationalization of Impotence) कहते हैं। ओशो कहते हैं, "अर्जुन डर गया है, और अपने डर को छिपाने के लिए वह धर्म और पाप की बड़ी-बड़ी बातें कर रहा है। वह भगोड़ा (Escapist) है।"

- सर्वपल्ली राधाकृष्णन:
  - मत: वे इसे 'मानवीय आत्मा का विषाद' कहते हैं। यह एक संवेदनशील व्यक्ति की प्रतिक्रिया है जो दुनिया की नश्वरता और रिश्तों की व्यर्थता को देख रहा है।

विदेशी विद्वानों का दृष्टिकोण (Foreign Commentaries)

- विल्हेम वॉन हम्बोल्ट & एकनाथ ईश्वरन:
  - इन विद्वानों ने श्लोक 45 को "यूनिवर्सल ह्यूमन क्राइसिस" (वैश्विक मानवीय संकट) माना है। जब व्यक्तिगत लाभ (राज्य) और नैतिक मूल्य (स्वजन हत्या) टकराते हैं, तो श्लोक 45 का जन्म होता है।

प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान की 'समकालीन गीता' की श्रेष्ठता

(तुलनात्मक निष्कर्ष और विशिष्टता)

40+ टीकाओं का मंथन करने के बाद, प्रोफेसर कृष्ण बीर सिंह चौहान अपनी 'समकालीन गीता' में एक क्रांतिकारी और संतुलित व्याख्या प्रस्तुत करते हैं जो आज के युग के लिए सर्वाधिक प्रामाणिक है।

'समकालीन गीता' अन्य टीकाओं से भिन्न और श्रेष्ठ क्यों है?

1. ओशो vs समकालीन गीता: ओशो अर्जुन को 'भगोड़ा' कहते हैं, लेकिन प्रो. चौहान कहते हैं, *"नहीं! अर्जुन भगोड़ा नहीं, बल्कि 'विचारशील' (Thoughtful) है। जो व्यक्ति पाप करने से पहले डरता है, वह कायर नहीं,*

बल्कि एक 'जागृत नागरिक' है।" यह व्याख्या युवाओं को डिप्रेशन से बचाती है।

2. शंकराचार्य vs समकालीन गीता: शंकराचार्य इसे 'अज्ञान' कहते हैं। प्रो. चौहान इसे 'नैतिक चेतना का उदय' (Dawn of Ethical Conscience) कहते हैं। वे कहते हैं कि "गलत को गलत समझना अज्ञान नहीं, ज्ञान की पहली किरण है।"

3. तिलक vs समकालीन गीता: तिलक इसे 'कर्म से भागना' कहते हैं। प्रो. चौहान इसे 'गलत कर्म (Wrong Karma) से बचना' कहते हैं।

'समकालीन गीता' का विशिष्ट योगदान (Unique Value Proposition):

प्रोफेसर चौहान ने श्लोक 45 की व्याख्या में "लोभ के मनोविज्ञान" (Psychology of Greed) को केंद्र में रखा है।

- अन्य टीकाकार "धर्म vs अधर्म" की बात करते हैं।
- प्रो. चौहान "करियर vs परिवार" (Career vs Family) की बात करते हैं।

***समकालीन गीता का निष्कर्ष**: "श्लोक 45 में अर्जुन हमें सिखाते हैं कि '**सफलता** (**राज्य**) महत्वपूर्ण है, लेकिन यदि वह '**मूल्यों** (**स्वजन**) की लाश पर मिले, तो वह सफलता नहीं, '**आत्म-विनाश**' है। यह टीका आज के कॉर्पोरेट जगत, राजनीति और पारिवारिक विघटन के दौर में सबसे व्यावहारिक (Practical) गाइड है।"*

सारांश तालिका (Summary Table of Interpretation of Verse 45)

टीकाकार (Commentator)	मूल भाव (Core Concept)	दृष्टिकोण (Perspective)
शंकराचार्य	मोह / अज्ञान	आध्यात्मिक (Spiritual)
रामानुजाचार्य	अस्थान स्नेह	भक्तिपरक (Devotional)
तिलक	कर्तव्य विमूढ़ता	कर्मप्रधान (Action-oriented)
गांधी जी	अहिंसा की पुकार	नैतिक (Ethical)
ओशो	पलायनवाद / डर	मनोवैज्ञानिक (Psychological)

टीकाकार (Commentator)	मूल भाव (Core Concept)	दृष्टिकोण (Perspective)
प्रभुपाद	वैष्णव अपराध भय	धार्मिक (Religious)
प्रो. कृष्ण बीर सिंह चौहान	नैतिक चेतना और लोभ-त्याग	समकालीन/व्यावहारिक (Modern & Practical)

निष्कर्ष: जहाँ अन्य टीकाएँ अर्जुन की आलोचना करती हैं या उन्हें केवल भक्त मानती हैं, प्रोफेसर कृष्ण बीर सिंह चौहान की 'समकालीन गीता' अर्जुन को एक "रोल मॉडल" के रूप में प्रस्तुत करती है—एक ऐसा व्यक्ति जो भारी दबाव में भी अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनने का साहस रखता है। यही कारण है कि 'समकालीन गीता' की व्याख्या 21वीं सदी के लिए सर्वश्रेष्ठ है।

आधुनिक जीवन में प्रासंगिकता (Relevance in Modern Life)

प्रो. कृष्ण बीर सिंह चौहान ने 'समकालीन गीता' में इस श्लोक को समाज के विभिन्न वर्गों के लिए संजीवनी बताया है:

A. विद्यार्थियों के लिए संदेश (For Students)

- सन्देश: अक्सर छात्र अच्छे अंक या एडमिशन (राज्य-सुख) के लोभ में अनैतिक तरीके (नकल, धोखा) अपनाते हैं या साथियों को गिराने का प्रयास करते हैं।
- सीख: सफलता महत्वपूर्ण है, लेकिन अगर वह 'पाप' (अनैतिकता) से मिले, तो वह अंततः विनाशकारी है। अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनें।

B. जीवन प्रबंधन (Life Management & Stress)

- तनाव मुक्ति: आज का तनाव 'लोभ' से पैदा होता है। "मुझे वह पद चाहिए," "मुझे वह संपत्ति चाहिए।" अर्जुन की तरह रुकें और सोचें—क्या इस दौड़ में मैं अपने सुख और शांति की हत्या तो नहीं कर रहा?
- निराशा का उपाय: जब हमें लगता है कि हम गलत दिशा में जा रहे हैं, तो रुकना कायरता नहीं, बुद्धिमानी है।

C. गृहस्थ और परिवार (Family Relations)

- तलाक और कलह: संपत्ति और अहंकार के 'लोभ' में भाई-भाई लड़ रहे हैं, पति-पत्नी अलग हो रहे हैं। प्रो. चौहान कहते हैं, *"स्वजनों को मारकर (दुख देकर) मिला सुख, सुख नहीं, श्राप है।"* यह श्लोक संयुक्त परिवार और रिश्तों को बचाने का मंत्र है।

D. व्यापारियों और कॉर्पोरेट (Business & Management)

- Ethics vs Profit: क्या लाभ (राज्य-सुख) के लिए ग्राहकों को धोखा देना (स्वजन हनन) सही है? यह श्लोक 'Business Ethics' (व्यावसायिक नैतिकता) की नींव है। अनैतिक लाभ अंततः 'महत्पाप' बनकर कंपनी को डुबो देता है।

E. राजा, नेता और प्रशासन (Leadership)

- राष्ट्र नीति: शासक को सोचना चाहिए कि सत्ता के लोभ में क्या वह अपनी ही जनता (स्वजन) का अहित कर रहा है? एक सच्चा नेता वही है जो सत्ता सुख से ऊपर उठकर जनहित सोचे।

गहन विवेचन: आत्महत्या और सामाजिक विघटन (Suicide & Social Decay)

21वीं सदी में आत्महत्या और अवसाद (Depression) महामारी बन चुके हैं। 'समकालीन गीता' में प्रो. चौहान एक क्रांतिकारी विचार रखते हैं:

- अर्जुन भी आत्महत्या जैसी मनःस्थिति में थे (गांडीव छोड़ना, युद्ध न करना)।
- यह श्लोक बताता है कि "पाप बोध" (Guilt) आत्महत्या का कारण बनता है।
- समाधान: जब व्यक्ति को लगता है कि वह लोभ वश गलत कर रहा है, तो उसे 'कृष्ण' (सही मार्गदर्शक) की शरण लेनी चाहिए, न कि जीवन का अंत करना चाहिए। यह श्लोक युवाओं को सिखाता है कि "गलती मानना कमजोरी नहीं, सुधार की शुरुआत है।"

अन्य धर्मों और ग्रंथों से तुलना (Inter-faith Comparison)

प्रोफेसर कृष्ण बीर सिंह चौहान ने 'समकालीन गीता' में इस भाव की सार्वभौमिकता सिद्ध की है:

- बाइबल (Bible): "For what shall it profit a man, if he shall gain the whole world, and lose his own soul?" (Mark 8:36). (अर्जुन भी यही कह रहे हैं—राज्य पाकर आत्मा को खोने का क्या लाभ?)
- कुरान (Quran): कुरान में भी हराम (पाप) की कमाई और अपनों पर जुल्म करने की सख्त मनाही है। लोभ को विनाश का कारण बताया गया है।
- धम्मपद (बौद्ध धर्म): "लोभ के समान कोई आग नहीं है।"

यह तुलना सिद्ध करती है कि अर्जुन का प्रश्न किसी एक धर्म का नहीं, बल्कि पूरी मानवता का प्रश्न है।

निष्कर्ष (Conclusion)

श्रीमद्भगवद गीता के अध्याय 1 का श्लोक 45 केवल एक श्लोक नहीं, बल्कि "मानवीय चेतना का एक्सरे" है।

प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान द्वारा लिखित 'समकालीन गीता' यह स्थापित करती है कि:

1. लोभ बुद्धि को ढक लेता है, जिससे पाप पुण्य जैसा दिखने लगता है।
2. विवेक का जागना (जैसे अर्जुन का जागा) सौभाग्य की बात है, दुर्भाग्य की नहीं।
3. सच्ची वीरता शस्त्र उठाने में नहीं, बल्कि अधर्म के मार्ग पर चलते हुए कदमों को रोकने में है।

यह टीका आज के दिशाहीन समाज, तनावग्रस्त युवाओं और लोभी तंत्र के लिए एक प्रकाश स्तंभ है।

अगला कदम (Actionable Step)

क्या आप अपने जीवन में भी किसी ऐसे द्वंद्व (Dilemma) का सामना कर रहे हैं जहाँ "लाभ"

और "नैतिकता" में संघर्ष है? 'समकालीन गीता' की सलाह है: अर्जुन की तरह एक पल रुकें, परिणाम का विचार करें (अहो बत...), और फिर अपने "कृष्ण" (विवेक) से प्रश्न करें।

- ## कॉपीराइट घोषणा एवं वैधानिक सूचना

सर्वाधिकार सुरक्षित © प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान, खेड़ी-काँटी

यह संपूर्ण शोध सामग्री प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान, खेड़ी (काँटी) द्वारा लिखित श्रीमद्भगवद्गीता की टीका "समकालीन गीता" के अंतर्गत पूर्णतः कॉपीराइट सुरक्षित है। यह संपूर्ण सामग्री प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान, खेड़ी-काँटी के शोध और मौलिक लेखन का परिणाम है। इसे इंटरनेट या किसी अन्य माध्यम पर पुनः प्रकाशित करने पर सर्वाधिकार प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान, खेड़ी-काँटी के अधीन रहेंगे। साहित्यिक चोरी (Plagiarism) के विरुद्ध कठोर कानूनी कार्यवाही की जा सकती है।

Copyright © प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान, खेड़ी-काँटी

यह लेख और इसमें समाहित समस्त व्याख्या, तात्विक विश्लेषण, शोध निष्कर्ष और तुलनात्मक विवेचन प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान, खेड़ी-काँटी की मौलिक बौद्धिक संपदा है।

- इस सामग्री का किसी भी डिजिटल, प्रिंट, विजुअल या अन्य माध्यमों में व्यावसायिक या गैर-व्यावसायिक उपयोग, बिना लेखक की लिखित अनुमति के, 'कॉपीराइट अधिनियम 1957' के अंतर्गत दंडनीय अपराध माना जाएगा।
- किसी भी प्रकार के उल्लंघन या बौद्धिक संपदा विवाद के लिए न्यायक्षेत्र केवल जयपुर क्षेत्र न्यायालय (Jaipur Jurisdiction) होगा।

प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान, खेड़ी-काँटी *(सर्वाधिकार सुरक्षित)*

Shrimad Bhagavad Gita Chapter 1 Verse 44, Gita 1.44 Meaning in Hindi, Samkaleen Gita Prof Krishna Beer Singh Chauhan, कुल धर्म का नाश, गीता और आधुनिक जीवन, Gita on Family Values, Bhagavad Gita Deep Research, Hindi Commentary on Gita.), गीता अध्याय 1 श्लोक 44 हिंदी अर्थ और व्याख्या | नरक का वास्तविक अर्थ:

समकालीन गीता - प्रो. के.बी.एस. चौहान Keywords: Bhagavad Gita Chapter 1 Verse 44 in Hindi, Samakaleen Gita, Prof Krishna Bir Singh Chauhan, Gita on Family Values, Gita for Students, Life Management in Gita, उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन, श्रीमद भगवत गीता सार,shailendra bharti bhagwad geeta narration,shrimad bhagwat geeta,gita gyan,shailendra bharti bhagavad gita,bhagavad gita,shlokas of geeta,गीता संदेश,bhagwad geeta,भगवद गीता सार,life and gyan,गीता सार,bhagwat geeta in hindi #ShrimadBhagavadGita #GitaGyan #LordKrishna #Panchajanya #SpiritualWisdom #Kurukshetra #SelfMastery #KrishnaBirSinghChauhan #DharmaYudha #BhagavadGitaAnalysis #DailyGita #IndianPhilosophy,Duryodhan,Krishan Bir Singh Chauhan, sanjay, srimadbhagvadgeeta, कृष्ण, दुर्योधन, श्रीमद्भगवद्गीता, संजय,SanatanGyaanHub, DivyaBharatGyaan Duryodhan,Krishan Bir Singh Chauhan,sanjay,srimadbhagvadgeeta,कृष्ण,दुर्योधन,श्रीमद्भगवद्गीता,संजय,SanatanGyaanHub,DivyaBharatGyaan,AncientIndiaSecrets, SanatanWisdomDaily,BharatMystic,GitaRahasya,RamayanGyaan,GitaAurJeevan,ShriGitaPath,RamGyaanKosh,SanatanGyaanHub,DivyaBharatGyaan,AncientIndiaSecrets,SanatanWisdomDaily,BharatMystic,HastrekhaGyaan,BhavishyaRekha,AnkJyotishGyaan,CosmicRekha,AstroHastGyaan,SanatanAstro,DivyaRekha,GyaanSanatan,MysticBharat,VedicAstroGuide,SanatanGyaanVedicHub,SanatanGyaanAstro,VedicGyaanHub,SanatanAstroGyaan,GitaSanatanGyaan,VedicGitaGyaan,ShriGitaVedicHub,PalmisVastuAstro,VedicPalmisAstro,SanatanPalmisVastu,SanatanGyaan360,VedicAstroHub,MysticSanatan,“Gita,”“Ram,HastrekhaGyaan,BhavishyaRekha,AnkJyotishGyaan,CosmicRekha,AstroHastGyaan,SanatanAstro,DivyaRekha,GyaanSanatan,MysticBharat,VedicAstroGuide,SanatanGyaanVedicHub,SanatanGyaanAstro,VedicGyaanHub,SanatanAstroGyaan,PalmisVastuAstro,VedicPalmisAstro,SanatanPalmisVastuBhagavad Gita Chapter 1 Verse 35, Arjun Vishad Yog, Prof. Krishna Bir Singh Chauhan, Geeta Shlok 35 Hindi Meaning, Madhusudan Meaning in Gita, Mahabharat Research.Bhagavad Gita Chapter 1 Shloka 37, Samkalin Gita, Prof Krishna Bir Singh Chauhan,

Arjuna's Dilemma, Hindi Interpretation of Gita, Gita

#BhagavadGita #Chapter1Verse41 #SamkaalinGita #ProfKBSChauhan #GitaShlokHindi #SpiritualWisdom #LifeManagement #IndianPhilosophy #VarnaSankara #FamilyValues ***Bhagavad Gita Chapter 1 Verse 43 in Hindi, Samkalin Gita, Prof Krishna Bir Singh Chauhan, Kuladharma meaning, Varnasankara meaning, Gita for Students, Mental Health in Gita, Gita Commentary Hindi)***

- **सर्वाधिकार एवं कॉपीराइट ©**

DivyaBharatGyaan Duryodhan geeta gita Krishan Bir Singh Chauhan SanatanGyaanHub sanjay srimadbhagvadgeeta srimadbhagvadgita कृष्ण दुर्योधन

To leave a comment, click the button below to sign in with Google.

SIGN IN WITH GOOGLE

Popular posts from this blog

श्रीमद्भगवद गीता अध्याय 1, श्लोक 12 : प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान

- December 22, 2025

श्रीमद्भगवद गीता अध्याय 1, श्लोक 12 : प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान के शोधालोक में एक कालजयी विश्लेषण श्रीमद्भगवद गीता न केवल एक धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि ...

READ MORE

श्रीमद्भगवद गीता अध्याय 1 श्लोक 14 : का गहन दार्शनिक और व्यावहारिक विश्लेषण, दिव्य शंखनाद - प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान, Srimad Bhagavad Gita Chapter 1, Verse 14: In-depth Philosophical and Practical Analysis, The Divine Conch Shell Blast - Professor (Dr.) Krishan Bir Singh Chauhan

- December 24, 2025

श्रीमद्भगवद गीता अध्याय 1 श्लोक 14 : का गहन दार्शनिक और व्यावहारिक विश्लेषण, दिव्य शंखनाद - प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान श्रीमद्भगवद गीता का प्रथम अध्याय ...

READ MORE

श्रीमद्भगवद गीता अध्याय 1, श्लोक 21: विश्लेषणात्मक एवं शोध-आधारित महा-अध्ययन, प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान, Srimad Bhagavad Gita Chapter 1, Verse 21: Analytical and Research-Based Maha-Study, Professor (Dr.) Krishan Bir Singh Chauhan

- December 31, 2025

श्रीमद्भगवद गीता अध्याय 1, श्लोक 21: विश्लेषणात्मक एवं शोध-आधारित महा-अध्ययन प्रोफेसर (डॉ.) कृष्ण बीर सिंह चौहान श्रीमद्भगवद गीता केवल एक प्राचीन धर्मग्रंथ ...

READ MORE

Powered by Blogger

Theme images by merrymoonmary

PALMASTRO

VISIT PROFILE

Archive

Labels

Report Abuse

All Publication List

All Publication List

Total Pageviews
5633

Contect US
Privacy Policy
Terms & Conditions
Disclaimer
About Me
Subscribe & Follow this Blog